© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 04 , Issue : 11 | October – December 2017

गुप्त काल एक स्वर्ण युग कहा जाता है पर एक विवेचना

Sumit Kumar Singh, Assistant Teacher
Upgraded Middle School Kunwar ,Rajnagar Madhubani Bihar

सार

प्राचीन भारतीय इतिहास में गुप्त काल का इतिहास एक श्रेष्ठ स्थान रखता है। गुप्त सम्राटों ने उत्तर भारत को एक राजनीतिक स्थिरता प्रदान की। गुप्त साम्राज्य 200 वर्षों तक रहा। एक के बाद एक योग्य सम्राटों ने अपने साम्राज्य को दूर तक फैलाया। करीब पूरे भारतवर्ष को इन्होंने एक सूत्र में बांध दिया था। गुप्त काल में हिन्दू धर्म को उन्नति मिली तो बाकी धर्मो को भी स्थान मिला। प्राचीन भारतीय इतिहास में गुप्त काल का इतिहास एक श्रेष्ठ स्थान रखता है। गुप्त सम्राटों ने उत्तर भारत को एक राजनीतिक स्थिरता प्रदान की। गुप्त साम्राज्य 200 वर्षों तक रहा। एक के बाद एक योग्य सम्राटों ने अपने साम्राज्य को दूर तक फैलाया। करीब पूरे भारतवर्ष को इन्होंने एक सूत्र में बांध दिया था। गुप्त काल में हिन्दू धर्म को उन्नति मिली तो बाकी धर्मो को भी स्थान मिला।

मुख्य शब्द : भारतीय, इतिहास, सम्राटों, योग्य, हिन्दू इत्यादि ।

प्रस्तावना

यह काल अपने प्रतापी राजाओं तथा अपनी सर्वोत्कृष्ट संस्कृति के कारण भारतीय इतिहास के पृष्ठों में स्वर्ण के समान प्रकाशित है । मानव जीवन के सभी क्षेत्रों ने इस समय प्रफुल्लता एवं समृद्धि के दर्शन किये थे । कुछ पाश्चात्य विद्वानों ने इस काल को भारतीय संस्कृति के पुनरुत्थान का काल माना है । परन्तु इस प्रकार का विचार भ्रामक लगता है क्योंकि इस स्थिति में हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि गुप्त-काल के पूर्व कोई ऐसा युग था जिसमें भारतीय संस्कृति के तत्व पूर्णतया विलुप्त हो गये थे । यह सर्वथा अस्वाभाविक बात होगी । हमें ज्ञात है कि चिरस्थायित्व एवं निरन्तरता हमारी संस्कृति की प्रमुख विशेषतायें हैं । भारतीय संस्कृति के विकास की धारा अबाध गति से प्रवाहित होती रही तथा कभी भी इसके तत्व विलुप्त नहीं हुए ।

गुप्त-काल में आकर विकास की यह धारा अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच गयी तथा यह उन्नति बाद की शताब्दियों के लिये मानदण्ड बन गयी । अत: हम गुप्तकाल को भारतीय संस्कृति के चरमोत्कर्ष का काल मान सकते हैं, न कि पुनरुत्थान का । अपनी जिन विशेषताओं के कारण गुप्तकाल भारतीय इतिहास के पृष्ठों में स्वर्णयुग का स्थान बनाये हुए हैं ।

सामाजिक दशा

गुप्त सम्राट हिन्दू धर्म के समर्थक थे। इसी कारण इस काल में ब्राह्मणों की श्रेष्ठता और हिन्दुओं की चतुर्वर्ण व्यवस्था पर विशेष बल दिया गया। गुप्त काल से पहले कई विदेशी आक्रमणकारी आए और यहीं भारत में बस गए। इन विदेशियों को हिन्दू समाज में स्थान दिया गया। उद्योग और व्यापार में उन्नति हुई, इसी कारण धनाढ्य वर्ग की उत्पत्ति हुई। इस काल में वर्ण व्यवस्था पर भी जोर दिया गया लेकिन बहुत ही उदारता के साथ।

कोई भी अपना धर्म बदल सकता था। शूद्र व्यापार कर सकते थे। वो सेना में भी भर्ती हो सकते थे। ब्राह्मण भी सेना में शामिल हो सकते थे। छत्रिय व्यापार करने लगे और उन्हें वेद पढ़ने का अधिकार भी दिया गया।

शूद्रों को कहा गया कि अगर वो सदाचारी रहते हैं तो उन्हें यज्ञ करने का भी अधिकार है। गुप्त काल की सबसे बड़ी विशेषता यही रही कि, शूद्रों की स्थिति में काफी सुधार हुआ।

जब वर्ण व्यवस्था पर ज्यादा जोर नहीं दिया गया तो दास प्रथा भी कमजोर हो गई। बाहर के कई विदेशी यात्री जब भारत भ्रमण पर आए तब वो भी ये पता नहीं लगा सके कि दास प्रथा भी प्रचलित थी। दासो के साथ अनुचित व्यवहार नहीं किया जाता था। किसी पर भी कठोर नियम लागू नहीं होते थे फिर भी न्याय व्यवस्था बेहद मजबूत थी।दास अधिकतर उन्हीं लोगों को बनाया जाता था जो युद्धबंदी और कर्जदार होते थे। किसानों की हालत में भी सुधार हुआ। कृषि पर विशेष बल दिया गया।उनसे ज्यादा लगान भी नहीं वसूला जाता था।जो धनाढ्य वर्ग था, उसने गरीबों और यात्रियों के लिए अनेक धर्मशाला बनवा दी थी।

औरतों को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। औरतें बड़ी आयु में विवाह करती थी। कोई धार्मिक अथवा राजनीतिक आयोजन होता था तो औरतें उनमें समान रूप से भाग लेती थी। इस काल में एक पत्नी का प्रचलन था। केवल राजा और अमीर वर्ग के लोग ही एक से ज्यादा पत्नी रख सकते थे।औरत को त्यागने का अधिकार किसी को ना था। इस युग में गनिकाओ यानी वेश्याओं को नफरत से नहीं देखा जाता था।इन्हे देवदासी भी कहा जाता था।वहां के बड़े मंदिरों में देवदासी रहने लगी थी।उनसे नृत्य और गायन कला में निपुण होने की आशा रखी जाती थी।

व्यक्तियों का चरित्र बहुत श्रेष्ठ होता था। ईमानदारी, सच्चाई, साहस, सादगी, दान, उदारता, शीक्छा, आदि ऐसे अनेक मानवीय गुण थे जिनका पालन सभी करते थे। खान पान में हर व्यक्ति सात्विक था। मांस और शराब का प्रयोग बहुत कम होता था।केवल निम्न जाति के लोग ही इनका सेवन करते थे। जन साधारण का रहन सहन बहुत सादा था।

गुप्त काल में अनेक नगरो का निर्माण हुआ। उनमें विलास की सभी सामग्री उपलब्ध होती थी।स्त्री और पुरूष दोनों अपने सौंदर्य पर ध्यान देते थे।उस समय के अनेक ग्रंथो से तत्कालीन नगर जीवन का ज्ञान मिलता है, जो उस समय के सुख साधनों और विलासिता पूर्ण जीवन का उल्लेख करते हैं।

आर्थिक दशा

गुप्त काल में साम्राज्य की स्थिति आर्थिक रूप से बहुत मजबूत थी। कृषि,,व्यापार और उद्योग में उन्नति के कारण देश धन धान्य से पूर्ण था।मंदिरों के लिए ब्राह्मणों को भूमि दान दी गई। बहुत सी झीलें और नहर भी बनवाई गई।कृषि के साथ साथ पशु पालन में भी वृद्धि हुई।इस काल में अनेक तरह के व्यवसाय थे जैसे धोबी, कुम्हार, बर्तन बनाने वाले, लोहार, बढ़ाई, हथियार बनाने वाले, शिल्पकार, जुलाहे, टोकरी बुनने वाले, दर्जी, सुनार आदि प्रमुख व्यवसाय थे।

इस काल में सूती, ऊनी और रेशमी कपड़ा बहुत बनता था। बनारस रेशमी कपड़े के लिए प्रसिद्ध था तो मथुरा सूती कपडे के लिए प्रसिद्ध था। इस काम में आंतरिक और विदेशी व्यापार उन्नति पर था। इस काम में सामंती प्रथा का प्रारंभ हुआ।आगे आने वाले समय में इस सामंती प्रथा पर अंकुश लगाना संभव ना हो सका और ये प्रथा मजबूत होती गई।

धार्मिक दशा

धार्मिक दृष्टि से गुप्त काल की मुख्य विशेषता मंदिरों का निर्माण,हिन्दू धर्म का पुनरुत्थान,हिन्दुओं की उदार प्रवृत्ति और विदेशियों को हिन्दू धर्म में शामिल किया जाना और बौद्ध धर्म को जगह देना, ये विशेषता रही। आधुनिक भारत में जो हिन्दू धर्म का आधार है वो इसी काल में हुआ।गुप्त सम्राट अपने को परम भागवत मानते थे।ये लोग विष्णु और लक्ष्मी के उपासक थे। इन्होंने ब्राह्मणों को दान दिया, मंदिरों का निर्माण किया, कई अश्वमेध यज्ञ किए। महाभारत का स्वरूप प्रदान करना, मीमांसा, ब्रह्मसूत्र, योगसूत्र, न्यायसूत्र, आदि का लिखा जाना।विभिन्न पुराणों की रचना अथवा उनका संकलन भी हिन्दू धर्म के प्रचार में सहायक सिद्ध हुआ।

गुप्त काल के हिन्दू धर्म ने पुरानी और नवीन सभी धार्मिक प्रवृत्तियों को सम्मिलित करके जनसाधारण के लिए एक आकर्षक धर्म प्रदान किया। हालाकि इस युग में राम को श्रेष्ठ स्थान प्राप्त नहीं हुआ लेकिन कृष्ण को सब बहुत मानते थे। बुद्ध को भी विष्णु का अवतार माना गया।दक्खिन भारत में शिव पूजा का ज्यादा महत्व रहा।

इसके अतिरिक्त बाकी देवताओं जैसे, कार्तिकेय, गणेश, सूर्य और शक्ति देवी की पूजा का भी प्रचलन बढ़ा। गंगा यमुना जैसी नदियों की मान्यता, विभिन्न व्रतो को रखना, प्रयाग और बनारस को तीर्थस्थान मानना इसी काल में शुरू हुआ। इस काल में हिन्दू धर्म ने यूनानी, शक, कुषाण आदि विदेशियों को अपने में समाहित कर लिया।हिन्दू धर्म के प्रचार की भावना से प्रेरित होकर पश्चिम में सीरिया और मेसोपोटामिया तक तथा दक्खिन में जावा, बाली, सुमात्रा, और बोर्नियो तक भारतीय संस्कृति का प्रसार किया। गुप्त काल में बौद्ध धर्म को भी एक प्रमुख स्थान मिला लेकिन बौद्ध धर्म कभी सभी भारतीयों को अपने में समाहित नहीं कर सका। अशोक की लाख कोशिशों के बावजूद भी हिन्दू धर्म विलुप्त नहीं हुआ।

उपसंहार

गुप्त काल में पढ़ने पर बहुत ज़ोर दिया गया। पाटलिपुत्र,वल्लभी, उज्जैन, काशी, मथुरा, नासिक, सांची, आदि ज्ञान अर्जित करने के प्रमुख स्थान थे।राजाओं और धनाढ्य वर्ग की ओर से शिक्षा संस्थाओं को भूमि प्रदान की जाती थी। भूमि के साथ धन भी दान दिया जाता था। अच्छे विद्यालयों में प्रवेश पाने का एकमात्र उपाय विद्यार्थी की योग्यता होती थी। प्रवेश पाने के पश्चात उसकी शिक्षा, रहन सहन, खाने और पीने की व्यवस्था सब कुछ विद्यालय का उत्तरदायित्व होता था। गुप्त काल में धर्म और धर्म निरपेक्ष दोनों ही प्रकार के साहित्य की प्रगति हुई।साहित्यिक प्रगति के कारण ही इस युग को पर्क्लीन युग और ऑगास्टन युग अथवा अभिजात्य युग भी कहा जाता है। गुप्त काल में संस्कृत राजभाषा हो गई थी। इसी कारण अधिकांश ग्रंथ संस्कृति भाषा में ही लिखे गए।धर्म निरपेक्ष साहित्य में भी अनेक ग्रंथों की रचना हुई।इस काल में अनेक विद्वान हुए। सबांधू द्वारा रचित वासवदत्ता, भट्टी का रावण वध, भारवी का किरताजूर्निय, मुद्राराक्षस तथा देविचंद्रगुप्तम,दशकुमार_चरित आदि अनेक रचनाएं इस युग में हुई। गुप्त काल के साहित्यिक आकाश में कालिदास सबसे अधिक प्रकाशमान थे।इन्होंने सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य को समृद्ध किया।कालिदास सबकी सर्वसम्मति से भारत के महान कवि और नाटककार माने गए हैं।

इस प्रकार गुप्त काल में अनेक विद्वान हुए जिन्होंने अनेक भाषाओं में अपनी रचनाएं लिखी किन्तु जो श्रेष्ठ स्थान संस्कृत को प्राप्त हुआ वो अन्य किसी भाषा को प्राप्त नहीं हुआ। संस्कृत काव्य के बारे में एक अंग्रेज़ विद्वान ने लिखा कि, यदि प्रत्येक वर्ग इंच के आधार पर काव्य की बुद्धिमत्ता की तुलना की जाए तो कोई भी काव्य संस्कृत काव्य का मुकाबला नहीं कर सकता।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

[1] अंशुमद्भेदागम: एलिमेण्ट्स ऑफ़ हिन्दू आइक्नोग्राफी में उद्धृत, खण्ड 1, भाग 2, खण्ड 2, भाग 2

[2] कुमारसम्भव: किताब महल प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद

[3] काठक संहिता: सतलवेकर स्वाध्याय मण्डल, पारडी, 1950

[4] कामिकागम: पी.के. आचार्य द्वारा उद्धृत, ऐन इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ हिन्दू आर्किटेक्चर

[5] किरणतंत्र: पी.के. आचार्य द्वारा उद्धृत, ऐन इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ हिन्दू आर्किटेक्चर

[6] उपनिषद्: उपनिषद्वाक्यमहाकोशः (सम्पा. शंभू साधले) दो भाग, गुजराती प्रिंटिंग प्रेस, मुम्बई, 1941 से उद्धृत

[7] चुल्लवग्ग: सं. भिक्षु जगदीश कश्यप, नालन्दा देवनागरी-पालि सीरीज

[8] जातक: हिन्दी अनुवाद, छः खण्ड, भदन्त आनन्द कौसल्यायन, प्रयाग, सं. 2003, 2008, 2011, 2013, 2014 जातक अनुवाद, रोमन, बी. फाँसबोल, लन्दन, 1877